कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 07, (दिसंबर, 2023)
पृष्ठ संख्या 29–35

ड्रैगनफ्रूट (कमलम): किसानों की आय बढ़ाने के लिए एक सार्थक पहल

डॉ. पिंकी एस. शर्मा, श्री लखन के. मोकारीया,
डॉ. प्रणव बी. रविया,
श्री विशाल के. डोबरीया एवं श्री निकुंज आर. कावर
डायरेक्टरेट ऑफ एक्सटेंशन एज्युकेशन, जूनागढ़ विश्वविद्यालय, जूनागढ़, गुजरात, भारत।
Email Id: pinkisharma@jau.in

परिचय:

ड्रैगनफ्रूट जीनस *हिलोसेरियस* की वेल प्रकार कैक्टस (थोर) प्रजाति का फल है, जो एक बारहमासी पौधा है। गुजरात सरकार ने इस फल का नाम **"कमलम"** रखा है। इसे पूरी दुनिया में एक सजावटी पौधे के रूप में मान्यता दी गई है। चूंकि ड्रैगनफ्रूट के फूल बहुत सुंदर होते हैं, इसलिए उन्हें **"नोबल वुमन"** या **"रातरानी"** के रूप में भी जाना जाता है। दो सबसे आम प्रकारों में हरे रंग की परत के साथ यह चमकदार लाल रंग का होता है जो ड्रैगन के समान होता है। यह फल मधुमेह के रोगियों के लिये उपयुक्त, कैलोरी में कम और कैल्सियम, प्रोटीन, विटामिन–सी से भरपूर पौधा हैं। इम्यून सिस्टम और आयरन लेवल को बूस्ट अप करने के लिए यह एक उपयुक्त पौधा हैं।

ड्रैगनफ्रूट मध्य–अमेरिका का मूल निवासी है, लेकिन अब दुनिया भर में उगाया जाता है, खासकर उष्णकटिबंधीय देशों में। यह पहले सजावट के लिए इस्तेमाल किया गया था, लेकिन अब फलों की फसल के रूप में दुनिया भर में मान्यता प्राप्त कर चुका है। यह विभिन्न अजैविक और जैविक तनावों का सामना कर सकता है। यह एक तेजी से बढ़ने वाली वेल है जिसे आगे बढ़ने के लिए समर्थन की आवश्यकता होती है और फिर एक छाता आकार में बढ़ता है। उनका जीवन काल 15 से 20 साल तक है, इसलिए उनके लिए मजबूत और स्थायी समर्थन के लिए विशेष आर सी सी खंभे बनाए जाते है। ड्रैगनफ्रूट ने अपने स्वास्थ्य लाभ और बाजार मूल्य के कारण **'सुपर फ्रूट'** के रूप में लोकप्रियता हासिल की है। ड्रैगनफ्रूट को सलाद के रूप में खाया जा सकता है और सूप को अपरिपक्व फूलों की कलियों से भी बनाया जा सकता है। जैम, जूस, जेली, आइसक्रीम, पेस्ट्री, सिरप, कैंडी, दही आदि को भी ड्रैगनफ्रूट की वैल्यू जोड़कर बनाया जा सकता है।

स्वस्थ लाभ:

1. यह पोषक तत्वों के एक समृद्ध स्रोत के रूप में और न्यूट्रास्यूटिकल और भोजन की खपत के लिए उगाया जाता है।
2. सेहत के लिए कई फायदे वाला यह फल शरीर के सभी अंगों के लिए फायदेमंद होता है।
3. इसका सेवन आंख, त्वचा, पाचन तंत्र, हृदय, जोड़ों, कैंसर, श्वसन तंत्र, मधुमेह, डेंगू, मलेरिया, सामान्य बुखार, प्लेटलेट बूस्टिंग के साथ–साथ प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाने के लिए फायदेमंद है। यह विषाक्त पदार्थों को संतुलित करता है, कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करता है, और अस्थमा और खांसी के खिलाफ मदद करता है।

4. यह फल एंटीऑक्सीडेंट का एक समृद्ध स्रोत है।
5. फल के अंदर, एक काला महीन बी ओमेगा –3 होता है। जो मानसिक कमजोरी में बहुत उपयोगी है।
6. फल प्रोटीन, विटामिन, नियोसिन, अमीनो एसिड, वसा, कारबोहाइड्रेट्स, खाद्य फाइबर, कैरोटीन, लोहा, कैल्शियम, फास्फोरस, आदि में भी समृद्ध है।
7. यह कैंसर और समय से पहले बुढ़ापा आने से बचाता है।
8. यह रक्त शर्करा को कम करने में मदद कर सकता है।
9. इनमें प्रोबायोटिक्स होते हैं जो आंत में अच्छे और बुरे बैक्टीरिया के संतुलन में सुधार कर सकते हैं। रोग पैदा करने वाले वायरस और बैक्टीरिया को नष्ट कर सकता है और भोजन को पचाने में भी मदद कर सकता है।
10. यह प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत कर सकता है। ड्रैगन फ्रूट विटामिन–सी और अन्य एंटीऑक्सीडेंट में उच्च है, जो प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने के लिए बहुत अच्छे हैं।
11. यह शरीर में आयरन की मात्रा को बढ़ाता है, जिससे शरीर में ऑक्सीजन और ऊर्जा प्रदान करने में मदद मिलती है।

ड्रैगन फ्रूट के प्रति 100 ग्राम ताजे फल में पाए जाने वाले प्रमुख पोषक तत्व सारणी में दिये गये हैं।

पोषक तत्व	मात्रा
नमी	85.3 प्रतिशत
प्रोटीन	1.10 ग्राम
वसा	9.57 मि.ग्रा.
क्रूड फाइबर	1.34 मि.ग्रा.
ऊर्जा	67.70 किलो
कार्बोहाइड्रेट	11.2 मि.ग्रा.
ग्लूकोज	5.70 मि.ग्रा.
फ्रक्टोज	3.20 मि.ग्रा.
सोरबिटोल	0.33 मि.ग्रा.
विटामिन 'सी'	3.00 मि.ग्रा
विटामिन 'ए'	0.01 मि.ग्रा
नियासिन	2.80 मि.ग्रा
कैल्शियम	10.20 मि.ग्रा
आयरन	3.37 मि.ग्रा
कैलोरी मैग्नीशियम	38.90 मि.ग्रा
फास्फोरस	27.75 मि.ग्रा
पोटेशियम	272.0 मि.ग्रा
सोडियम	8.90 मि.ग्रा
जिंक	0.35 मि.ग्रा

भारत में रोपण और मांगः

भारत में, ड्रैगनफ्रूट को 1990 के दशक के अंत में पेश किया गया था। भारत में इसकी खेती का क्षेत्र धीरे–धीरे बढ़कर 5000 हेक्टेयर हो गया है। पिछले तीन–चार वर्षों में इसकी खेती के रकबे में भारी वृद्धि हुई है। वर्तमान में किसानों को लाभकारी मूल्य मिल रहा है। वर्तमान में, भारत थाईलैंड, मलेशिया, वियतनाम और श्रीलंका से ड्रैगनफ्रूट का आयात करता है। यह फल गल्फ यूरोपियन जैसे देशों में निर्यात के लिए एक उपयुक्त विकल्प साबित हो सकता है। प्रारंभ में, ड्रैगनफ्रूट की खेती कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल, तमिलनाडु, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के किसानों द्वारा की गई थी। आजकल, इसकी खेती के तहत क्षेत्र का विस्तार और विस्तार राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और पूर्वोत्तर राज्यों में हुआ

है। इस समय इस फल की खेती करने वाले राज्यों में मिजोरम सबसे आगे है।

उत्पादन और वृक्षारोपण क्षेत्र में अचानक वृद्धि मुख्य रूप से कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों के कारण है जिन्होंने 2018 के बाद वाणिज्यिक उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए पहल की है। गुजरात, मिजोरम, कर्नाटक और महाराष्ट्र भारत के ड्रैगनफ्रूट का लगभग 70% उत्पादन कर रहे हैं और उत्पादन में सबसे अधिक योगदान दे रहे हैं।

भारत और विदेशों में ड्रैगनफ्रूट के लिए बड़े बाजार कहां हैं?

वर्तमान में, ड्रैगनफ्रूट भारत के स्थानीय शहरों और ग्रामीण बाजारों में लोकप्रिय है। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बेंगलुरु, चेन्नई, पुणे प्रमुख स्थानीय ड्रैगनफ्रूट बाजार हैं। वियतनाम ड्रैगनफ्रूट का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक है। जबकि चीन ड्रैगनफ्रूट का सबसे बड़ा आयातक और उपयोगकर्ता है।

पिछले तीन–चार वर्षों में इसकी खेती के रकबे में भारी वृद्धि हुई है। वर्तमान में किसानों को लाभकारी मूल्य मिल रहा है। वर्तमान में, भारत थाईलैंड, मलेशिया, वियतनाम और श्रीलंका से ड्रैगन फ्रूट का आयात करता है। खाड़ी और यूरोपीय जैसे देशों में निर्यात के लिए यह फल एक उपयुक्त विकल्प साबित हो सकता है।

मौसम और भूमिः

पर्याप्त वर्षा वाले क्षेत्रों में ड्रैगनफ्रूट की खेती व्यावसायिक रूप से अच्छी तरह से की जाती थी। लेकिन समय के साथ यह शुष्क मौसम में भी अच्छी फसल देने में सक्षम साबित हुआ है। 500 से 1500 मीली मीटर (20 से 60 इंच) वर्षा इसके विकास के लिए उपयुक्त है। बहुत सारी वर्षा फूल और अपरिपक्व फलों को बहा देती है। 20 से 30 डिग्री सेल्सियस का तापमान रोपण के लिए उपयुक्त है। प्रकाश की तीव्रता भी खेती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ड्रैगनफ्रूट एक 'हल्की लौंग की फसल' है, लेकिन बहुत अधिक तापमान पर क्लैडडॉट पीला हो जाता है और पौधे पानी खोना शुरू कर देते हैं। इसलिए शुरुआती वर्षों में 20 से 50% छाया प्रदान करने की सलाह दी जाती है। यह पेड़ों/पौधों पर पकने वाला एक गैर–जलवायु फल है। यह समुद्र तल से 1700 मीटर की औसत ऊंचाई तक लगाया जा सकता है।

ड्रैगनफ्रूट भूमि की एक विस्तृत श्रृंखला पर उगाया जाता है। लेकिन भारी मिट्टी में जल जमाव के कारण पौधे की जड़ें सड़ने लगती हैं और विकास में बाधा आती है। रेतीली दोमट मिट्टी जो कार्बनिक पदार्थों में समृद्ध है, रोपण के लिए उत्कृष्ट है। 6 से 8 पीएच वाली भूमि खेती के लिए उपयुक्त है। ड्रैगनफ्रूट की उत्पत्ति ज्यादातर 40 सी है।श्री। यह सीमित है, इसलिए मिट्टी की गहराई खेती में बाधा नहीं बनती है। यह थोड़ी अम्लीय मिट्टी पसंद करता है और मिट्टी में मौजूद कुछ लवणों को भी सहन कर सकता है।

महत्व की किस्में:

वर्तमान में हमारे देश में उपलब्ध प्रकार या किस्में किसी अन्य देश से प्राथमिक पेश की गई किस्में हैं। अभी तक भारत से कोई किस्म जारी नहीं की गई है। दुनिया भर में ड्रैगनफ्रूट की 150 से अधिक किस्में उपलब्ध हैं। लेकिन थाईलैंड और वियतनाम से आयातित किस्मों की खेती की जाती है।

इसके रंग के आधार पर ड्रैगनफ्रूट 4 प्रकार के होते हैं:

1. लाल छिलका – सफेद गूदा
2. लाल छिलका – लाल गूदा
3. लाल छिलका – गुलाबी गूदा

4. पीला छिलका – सफेद गूदा

वर्तमान में, भारत में सफेद, लाल और गुलाबी गूदेकी किस्में उगाई जाती हैं। ड्रैगनफ्रूट 15 से 20 साल तक बहुत अच्छी पैदावार देता है।

संवर्धन:

ड्रैगनफ्रूट को बीज और कटे हुए पेन के साथ उगाया जाता है।

बीज से: पके फलों के बीज बोए और तैयार किए जाते हैं। इस तरह तैयार किए गए पौधे के फल की वृद्धि, उत्पादन और गुणवत्ता समान नहीं होती है और फल देर से शुरू होता है, इसलिए बीज से प्रजनन उचित नहीं है।

कट पेन से: मुख्य रूप से ड्रैगनफ्रूट को स्टेम कटिंग के साथ पेश किया जाता है। अच्छी गुणवत्ता 15 से 30 सी।श्री। लंबाई के परिपक्व खंडों को काटा जाता है और कवकनाशी पानी में भिगोया जाता है, 2 दिनों के लिए छाया में सुखाया जाता है, काटने और बोने से पहले प्लास्टिक की थैली में या गद्दे में बोया जाता है। ड्रैगनफ्रूट का पौधा 15 से 40 रुपये में बिकता है।

भूमि की तैयारी:

ड्रैगनफ्रूट एक प्रकार का कैक्टस (थोर) है जिसे ऊपर चढ़ने के लिए समर्थन की आवश्यकता होती है। रोपण से पहले इसे सीमेंट स्तंभ संरचना की आवश्यकता होती है। स्तंभ 100 किमी. जीआर। वजन सहन करने के लिए पर्याप्त मजबूत और टिकाऊ होना चाहिए। इसके लिए ज्यादातर 2 मीटर की ऊंचाई वाली सीमेंट पोस्ट की सिफारिश की जाती है और जमीन के अंदर इसकी गहराई 40 से.मी. जितनी होनी चाहिए।

- स्तंभ की ऊंचाई 7 फीट है और इसके ऊपर एक प्लेट (सीमेंट का एक चार–छेद सर्कल) की आवश्यकता होती है।
- ड्रैगनफ्रूट को 2.50 × 2.00 मीटर, 3.00 × 1.50 मीटर, 3.00 × 3.00 मीटर, 4. 00× 3.00 मीटर भी बोया जाता है।

ड्रैगन फ्रूट की खेती में लागत और कमाई

ड्रैगन की फसल में केवल एक बार पूंजी लगाने की आवश्यकता होती है। पारंपरिक खेती के मुकाबले इससे 25 वर्षों तक आमदनी ले सकते हैं। लागत की बात करें तो इसके पौधे कैक्टस की तरह होता है। इसके फलन के लिए पौधों को सहारे की जरुरत पड़ती है। इसके स्ट्रेक्चर को खड़ा करने के लिए प्रति एकड़ ढ़ाई से तीन लाख रुपए खर्च होते हैं। एक एकड़ में 10 फीट की दूरी पर खंभा खड़ा कर उसके सहारे पौध लगाए जाते हैं। अधिक उत्पादन के लिए पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति के बीच की दूरी 2x2 मीटर रखते हैं। गड्ढे का आकार 60 x 60 x 60 सें.मी. रखते हैं। इन गड्ढों को कम्पोस्ट, मृदा व 100 ग्राम सुपर फास्फेट मिलाकर भर दिया जाता है। प्रति एकड़ करीब 1700 पौधे की आवश्यकता होती है। एक बार मोटी रकम खर्च के बाद उसी स्ट्रेक्चर पर यह 25 वर्षो तक उपज देता है।

उर्वरक प्रबंधन:

आमतौर पर प्रत्येक पौधे को लगाने के समय 10 से 15 किमी। जीआर। छानीयू या कार्बनिक और 100 ग्राम एस।एस।पी। उर्वरक दिया जाना चाहिए। वानस्पतिक वृद्धि के लिए प्रथम वर्ष के दौरान प्रतिवर्ष 300 ग्राम नाइट्रोजन, 200 ग्राम फास्फोरस तथा 200 ग्राम पोटाश देना चाहिए। वयस्क पौधों को प्रति वर्ष प्रति पौधे 540 ग्राम नाइट्रोजन, 720

ग्राम फास्फोरस और 300 ग्राम पोटाश दिया जाना चाहिए। इस मात्रा को तीन महीने की अवधि में चार बराबर भागों में विभाजित किया जाता है।

इसके अलावा, सूक्ष्म पोषक तत्वों को सप्ताह में एक बार छिड़का जा सकता है जब फल विकसित हो रहे हों। फलों की निराई से कम से कम दस दिन पहले उर्वरकों को बंद कर देना चाहिए।

पेय प्रबंधनः

आमतौर पर सर्दियों में 2, गर्मियों में 5 लीटर प्रति पौधे के लिए एक सप्ताह में पानी की आवश्यकता होती है। इस फसल को ड्रिप सिंचाई प्रणाली के माध्यम से ही पानी दिया जाना चाहिए। इस प्रकार फसल को सालाना 1500 से 2000 लीटर प्रति पौधे पानी की आवश्यकता होती है।

खरपतवार, अंतरफसली और अंतरफसलीः

बड़े खरपतवारों को किसी भी खरपतवारनाशी द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। और छोटे खरपतवारों को हाथ से निंदा की जा सकती है। खरपतवार को नियंत्रित करने और पानी बचाने के लिए मल्चिंग का भी उपयोग किया जा सकता है। उच्च और गुणवत्ता वाले उत्पादन को सुनिश्चित करने के लिए उचित रूप से और समय पर इंटरक्रॉपिंग करने की सलाह दी जाती है।

दो स्तंभों के बीच की जगह में अधिक आय के लिए अलग–अलग अंतरफसलें ली जा सकती हैं। बैंगन, भिन्डी, गोभी, गाजर, मूली, लहसुन, पालक, मेथी, टंडल या दालें जैसे छोले, उड़द आदि सब्जियों का उपयोग अंतरफसलों में किया जा सकता है। पपीता और सरसों भी लगाई जा सकती है।

अन्य फिटनेसः

वेलों को नियमित रूप से कपड़े की पट्टियों से बांधना पड़ता है। समर्थन न देने में इसे बदलने और तोड़ने की क्षमता है। संरचनात्मक कटाई में, पौधे को केवल एक मुख्य शाखा (वेलो) विकसित करने की अनुमति दी जानी चाहिए जब तक कि यह स्तंभ के शीर्ष तक न पहुंच जाए। फिर जब पौधे की ऊंचाई स्तंभ से अधिक हो जाती है, तो शाखाओं को स्वाभाविक रूप से बढ़ने और बढ़ने की अनुमति दी जानी चाहिए। मुख्य बेल को बढ़ने की अनुमति देने के लिए अन्य शाखाओं को काट दिया जाता है। इस विधि को छंटाई कहा जाता है। अधिकतम उत्पादन के लिए मुख्य शाखाओं की संख्या 30 से 50 रखी जाए और शेष शाखाओं में कटौती की जाए। फलों को निकालने के बाद, मुख्य शाखा पर एक या दो द्वितीयक शाखाएं रखी जाती हैं और शेष शाखाओं को काट दिया जाता है और कवकनाशी के साथ छिड़का जाता है। इन कटी हुई शाखाओं का उपयोग पौधों के प्रजनन में किया जा सकता है। पौधे की अच्छी वृद्धि और विकास के लिए केवल 2 या 3 मुख्य तने होने चाहिए।

फसल संरक्षणः

आम तौर पर ड्रैगनफ्रूट कीटों और रोगों से मुक्त होता है। लेकिन कभी–कभी ईल, चुसिया कीड़े और उल्लू का संक्रमण होता है। खेत में जलभराव और उच्च तापमान को बीमारी से जोड़ा जाता है। इसलिए जलभराव को रोकने के लिए उचित कदम उठाए जाने चाहिए और जहां उच्च तापमान की समस्या है, वहां अधिकतम शेड का प्रावधान किया जा सकता है।

नियमित अंतराल पर बगीचे का उचित प्रबंधन और देखभाल बगीचे को कीटों और कीटों से मुक्त रखने में मदद करती है। पौधों के बीच सही दूरी रखने से बगीचे में वायु परिसंचरण और सूर्य के प्रकाश के समान वितरण में मदद मिलती है और जिससे बगीचे में बीमारी और कीटाणुओं का प्रसार कम हो जाता है। एंथ्रेक्सनोज रोग को 2 ग्राम/लीटर मैंकोजेब और 1 ग्राम/लीटर

कार्बेंडिज्म का छिड़काव करके नियंत्रित किया जा सकता है। ज्यादा धूप सड़ने जैसी बीमारियों का कारण बनती है। इसके लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.2%) द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है)।

सन बर्न की चोट:

सनबर्न की चोट भारत के कई हिस्सों में अधिकांश वृक्षारोपण क्षेत्रों में देखी जाती है। सन बर्न मार्च और अप्रैल के महीनों में हो सकता है जब दिन और रात के तापमान में बड़ा अंतर होता है। सनबर्न विशेष रूप से 38 डिग्री सेल्सियस से ऊपर के तापमान पर आम है। इस स्थिति में ड्रैगनफ्रूट को शेड नेट हाउस के नीचे लगाना चाहिए और पौधे पर एंटीट्रांसपिरेंट का छिड़काव किया जा सकता है।

स्टेम नासूर:

स्टेम कैंकर रोग की पहचान टहनियों पर होने वाले छोटे, गोल, धब्बेदार, नारंगी फफोले से की जा सकती है। समय के साथ, यह नासूर सड़ना शुरू हो जाता है। इस रोग को निरंतर निगरानी और कवकनाशी के छिड़काव के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है। फलों को नासूर से बचाने के लिए बैगिंग की जाती है।

फल मक्खी:

ड्रैगनफ्रूट में एक फ्रूट फ्लाई का संक्रमण भी होता है। फल मक्खियां फलों का रंग बदलती हैं, खासकर उन जगहों पर जहां छाल और गूदा संपर्क में आते हैं। बगीचे को साफ रखा जाना चाहिए और इसे नियंत्रित करने के लिए फ्रूट फ्लाई ट्रैप का उपयोग किया जाना चाहिए।

विकार:

पानी और मिट्टी के अंदर पोषक तत्वों के संतुलन में बदलाव फल पर कुछ विकार पैदा कर सकता है। इस विकार के कारण फलों के आकार, रंग और स्वाद में परिवर्तन होता है।

फलों की सड़न:

कुछ स्थितियों में फल सड़ जाते हैं। जिसके विभिन्न कारण हो सकते हैं:

1. नीला मौसम और निरंतर/भारी बारिश
2. कम या अधिक भुगतान किया गया पानी
3. पर्याप्त धूप नहीं मिल रही है
4. पर्याप्त खाद नहीं मिल रही
5. एक बीमारी के कारण

इसे नियंत्रित करने के लिए पानी, उर्वरक और धूप का समान रूप से प्रबंधन किया जाना चाहिए, बीमारियों को नियंत्रित किया जाना चाहिए और फलों को बारिश से बचाने के लिए फलों पर बैगिंग की जानी चाहिए।

फलों की बूंद:

ड्रैगनफ्रूट पौधों पर पकने वाला एक गैर–जलवायु फल है। उष्णकटिबंधीय मौसम इस क्षेत्र में अच्छी तरह से होता है। पुष्पाव्यास मई–जून के महीने में शुरू होता है। फूल आने के बाद 35 से 40 दिनों में फल खेती योग्य हो जाता है। फल आमतौर पर रोपण के 6 से 9 महीने बाद आना शुरू होता है। अपरिपक्व फल की छाल चमकीले हरे रंग की होती है, जो पकने के समय धीरे–धीरे हरे से गुलाबी–लाल रंग में परिवर्तित हो जाती है, फिर फल कटाई के लिए तैयार होता है। फलों का छिलका लाल–गुलाबी होने के बाद, इसे 3 से 4 दिनों में काट लें। यदि आप दूर के बाजार में बेचना चाहते हैं तो फल का रंग बदलने के 1 दिन के भीतर कटाई करें। आमतौर पर इसे सप्ताह में दो बार करें। फल को एक तेज चप्पू से काट लें।

फलों को काटने के बाद छाया में रखें। फल जुलाई से दिसंबर तक आते हैं। इस अवधि में हम ड्रैगनफ्रूट का एक आलीशान 6 से 8 बार ले सकते हैं।

उत्पाद:

ड्रैगनफ्रूट में वाणिज्यिक उत्पादन दूसरे वर्ष से शुरू होता है। औसत उत्पादन 10 से 12 टन प्रति हेक्टेयर है। प्रति एकड़ लगभग 3 से 5 टन उपज ली जा सकती है। अच्छी तरह से प्रबंधित उद्यानों से 16 से 27 टन प्रति हेक्टेयर तक का उत्पादन भी प्राप्त किया जा सकता है।

भंडारण विधि:

ताजा कटे हुए ड्रैगनफ्रूट का आत्म–जीवन 3 से 7 दिन है। ड्रैगनफ्रूट को कमरे के तापमान (25 डिग्री से 27 डिग्री सेल्सियस) पर 5 से 7 दिनों के लिए, कोल्ड स्टोरेज में (18 डिग्री सेल्सियस पर) 10 से 12 दिनों के लिए और 8 डिग्री सेल्सियस पर 20 से 22 दिनों के लिए कोल्ड स्टोरेज में संग्रहीत किया जा सकता है। (25 से 30 दिनों के लिए छिद्रित बक्से में रखा जा सकता है। फ्रेश फ्रूट बाजार में 1 सप्ताह के लिए 15° से 20° सेल्सियस के तापमान पर रखा जा सकता है।

बिक्री व्यवस्था:

वर्तमान में, ड्रैगनफ्रूट भारत के स्थानीय शहरों और ग्रामीण बाजारों में लोकप्रिय है। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बेंगलुरु, चेन्नई, पुणे प्रमुख स्थानीय ड्रैगनफ्रूट बाजार हैं। वियतनाम ड्रैगनफ्रूट का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक है। जबकि चीन ड्रैगनफ्रूट का सबसे बड़ा आयातक और उपयोगकर्ता है।

मूल्य वर्धन:

ड्रैगनफ्रूट का मूल्य जोड़कर जूस, जैम, जेली, सिरप, आइसक्रीम, पेस्ट्री या कैंडी बनाकर अधिक आय प्राप्त की जा सकती है।

उत्पादन में लाभ–लागत:

औसत फल का वजन 350 ग्राम से 450 ग्राम तक होता है। यदि बेलध्पौधे में अधिक फल लगे तो पतला (जीपददपदह) हो जाए, ताकि फल का आकार बना रहे। ड्रैगनफ्रूट की खेती 6 से 7 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर की शुरुआती लागत (3 से 4 लाख रुपये प्रति एकड़ की लागत से) में लाभदायक व्यवसाय के रूप में शुरू की जा सकती है। इस फसल को ज्यादा फसल प्रबंधन की आवश्यकता नहीं होती है।

इसका औसत बाजार मूल्य 100 से 150 रुपये है। पहले दो वर्षों में शुद्ध आय लगभग 200 रुपये थी, जिससे प्रति हेक्टेयर 3 से 4 लाख रुपये मिलते हैं। चौथे वर्ष से, प्रति हेक्टेयर प्रति वर्ष 6 से 7 लाख रुपये का नेट मुनाफा होता है।

वजन आधारित ग्रेड:

- A > 400 ग्राम,
- B = 200 – 400 ग्राम और
- C < इसमें 200 ग्राम हैं।

प्रारंभिक अच्छा उत्पादन, फल की सुंदर उपस्थिति, बहुत अच्छा स्वाद, आम तौर पर लंबी शेल्फ लाइफ, आसान रोपण विधि के साथ–साथ शुष्क क्षेत्रों में कम पानी की आवश्यकता और तनाव सहिष्णुता इसके भविष्य को उज्ज्वल बनाती है।